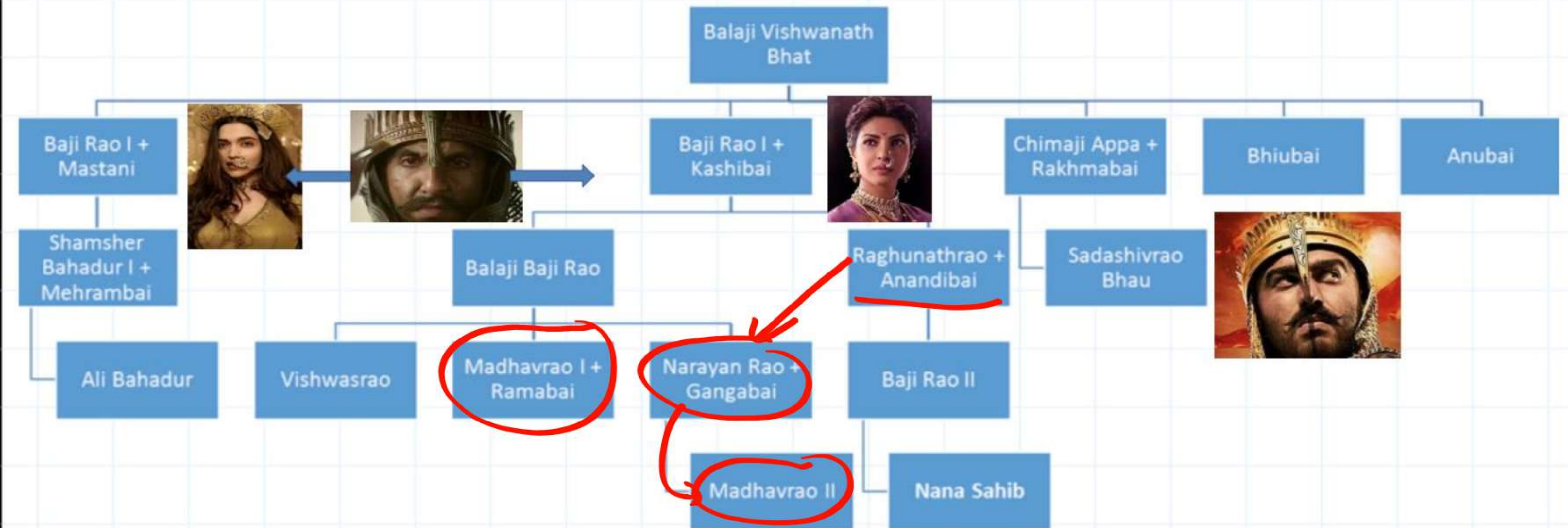




SHIVAJI'S ADMINISTRATION



- He divided the territory into three provinces. Provinces were divided into Prants which were subdivided into Parganas or Tarafs./ उन्होंने क्षेत्र को तीन प्रांतों में विभाजित किया। प्रांतों को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें परगना या तरफ़ में विभाजित किया गया था।
- Shivaji had well organized Army & Navy. The regular army was called Paga, while the loose auxiliaries called silahdars & were supervised by havildars./ शिवाजी के पास अच्छी तरह से संगठित सेना और नौसेना थी। नियमित सेना को पगा कहा जाता था, जबकि ढीले सहायक बलों को सिलहदार कहा जाता था और उनकी देखरेख हवलदार करते थे।
- He was assisted by a council of ministers called "Ashtapradhan" Mandal./ उन्हें "अष्टप्रधान" मंडल नामक मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।

Ashtapradhan

Post / पद	Function / कार्य
• Peshwa (Mukhya Pradhan) / पेशवा (मुख्य प्रधान)	Finance & general administration. Later became prime minister / वित्त व सामान्य प्रशासन। बाद में प्रधान मंत्री बने
• Senapati (Sar-i-Naubat) / सेनापति (सर-ए-नौबत)	Military commander / सैन्य प्रमुख
• Majumdar (Amatya) / माजुमदार (अमात्य)	Accountant General / महालेखाकार
• Waqeanavis (Mantri) / वक्केनवीस (मंत्री)	Intelligence, posts and household affairs / खुफिया कार्य, डाक व आंतरिक कार्य
• Sachiv (Surnavis) / सचिव (सुरनवीस)	Correspondence / पत्राचार
• Dabir (Sumant) / दाबीर (सुमंत)	Foreign minister & Master of ceremonies / विदेश मंत्री एवं समारोह प्रमुख
• Nyayadhish / न्यायाधीश	Justice / न्याय
• Panditrao (Sadar) / पंडितराव (सदार)	High Priest, managing internal religious matters / उच्च पुजारी, धार्मिक मामलों का प्रमुख

Revenue system of Maratha Empire

- The revenue system of Shivaji was based on that of Malik Amber of Ahmednagar./ शिवाजी की राजस्व प्रणाली अहमदनगर के मलिक अंबर की प्रणाली पर आधारित थी।
- Jagirdari abolished and introduced Ryotwari system./ जागीरदारी प्रथा समाप्त की गई और उसकी जगह रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गई।
- Land was measured using measuring rod called Kathi./ भूमि का मापन काठी नामक मापदंड से किया जाता था।
- Discouraged revenue farming/ शिवाजी ने राजस्व खेती को हतोत्साहित किया।
- Chauth (1/4th of land revenue) paid to Marathas to avoid Maratha raid./ चौथ (भूमि राजस्व का 1/4 हिस्सा) मराठों को मराठा छापों से बचने के लिए दिया जाता था।
- Sardeshmukhi was additional levy of ten percent (1/10 of standard land revenue) on lands over which Marathas claimed hereditary rights./ सरदेशमुखी एक अतिरिक्त 10% कर था (मानक भूमि राजस्व का 1/10), उन भूमियों पर जिन पर मराठों का पैतृक अधिकार माना जाता था।
- Reduced the power of existing Deshmukhs and Kulkarnis./ शिवाजी ने मौजूदा देशमुखों और कुलकर्णियों की शक्ति कम कर दी।
- Appointed own revenue officer called Karkuns./ शिवाजी ने अपने राजस्व अधिकारी कारकून नियुक्त किए।

Sambhaji Maharaj (1680 - 1689)

- Sambhaji was the **son of Shivaji Maharaj**, the first ruler/Chhatrapati of the Maratha Empire and his first wife **Saibai**./ संभाजी, मराठा साम्राज्य के प्रथम शासक/छत्रपति शिवाजी महाराज और उनकी पहली पत्नी सईबाई के पुत्र थे।
- Losing his mother at the age of two, he was raised by Shivaji's mother Jijabai. When he was nine years of age, he was sent to live as a political hostage at the palace of Raja Jai Singh I of Amber. Shivaji had to do this as surety that he would comply with the Treaty of Purandar he signed with the Mughals in 1665./ दो वर्ष की आयु में अपनी माँ को खो देने के बाद, उनका पालन-पोषण शिवाजी की माँ जीजाबाई ने किया। जब वे नौ वर्ष के थे, तब उन्हें आमेर के राजा जय सिंह प्रथम के महल में एक राजनीतिक बंधक के रूप में रहने के लिए भेज दिया गया था। शिवाजी को यह ज़मानत के रूप में करनी पड़ी थी कि वे 1665 में मुगलों के साथ की गई पुरंदर की संधि का पालन करेंगे।
- Sambhaji was thus a Mansabdar of the Mughals. In 1666, Shivaji and Sambhaji presented themselves at the court of the Mughal Emperor Aurangzeb. Aurangzeb put the duo under house arrest. Two months later, father and son escaped./ इस प्रकार संभाजी मुगलों के मनसबदार थे। 1666 में, शिवाजी और संभाजी मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए। औरंगजेब ने दोनों को नजरबंद कर दिया। दो महीने बाद, पिता-पुत्र भाग निकले।



1562 → Treaty of Ameer

← Bharmal → Akbar

Jai Singh I arrested Sambhaji (9 Yr.)

Cousin

✓ सोयराबाई

↑ माँ

✓ Rajaram I

अमोघ 1665

↓
1666

↓
1678
1680



11 March
1689

→ Sambhaji Maharaj

1680 → दत्तपति



1684 → Treaty with EIC
for हरिपार

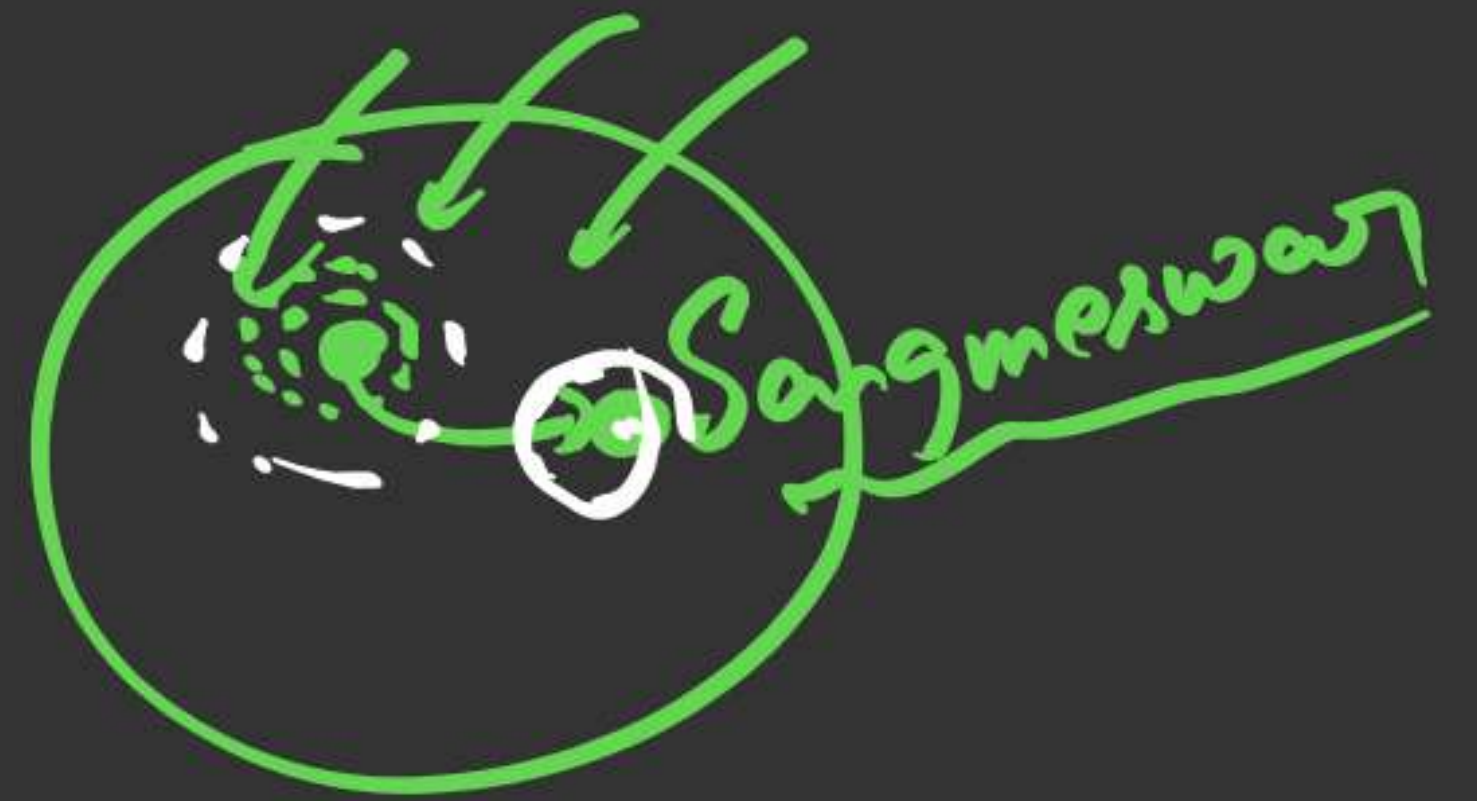


1687 → वॉर का पूरा



feb

1689 →



- Both sides reconciled following which there was a brief period of friendship between 1666 and 1670. During this period, Sambhaji fought alongside his father to support the Mughals against the Bijapur Sultan. / दोनों पक्षों में सुलह हो गई जिसके बाद 1666 और 1670 के बीच कुछ समय के लिए मित्रता का दौर चला। इस दौरान, संभाजी ने अपने पिता के साथ मिलकर बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुग़लों का समर्थन किया।



- In 1678, Shivaji kept Sambhaji imprisoned at the Panhala Fort to curtail his bad and irresponsible behaviour. / 1678 में, शिवाजी ने संभाजी के बुरे और गैर-ज़िम्मेदाराना व्यवहार को रोकने के लिए उन्हें पन्हाला किले में कैद कर लिया।



- After Shivaji died in April 1680, there were attempts by some ministers in the Maratha court to crown Sambhaji's half-brother Rajaram as the king. Rajaram was Shivaji's second son from his wife Soyarabai./ अप्रैल 1680 में शिवाजी की मृत्यु के बाद, मराठा दरबार के कुछ मंत्रियों ने संभाजी के सौतेले भाई राजाराम को राजा बनाने का प्रयास किया। राजाराम, शिवाजी की पत्नी सोयराबाई से उत्पन्न दूसरे पुत्र थे।
- Sambhaji, however, got wind of the plot and soon took possession of the forts at Panhala and Raigad. He was crowned the Chhatrapati on 20th July 1680. Soon after, he imprisoned Rajaram, Soyarabai and Rajaram's wife. He also executed all the ministers who had conspired against him./ हालाँकि, संभाजी को इस षड्यंत्र की भनक लग गई और उन्होंने शीघ्र ही पन्हाला और रायगढ़ के किलों पर कब्जा कर लिया। 20 जुलाई 1680 को उन्हें छत्रपति का ताज पहनाया गया। इसके तुरंत बाद, उन्होंने राजाराम, सोयराबाई और राजाराम की पत्नी को कैद कर लिया। उन्होंने उन सभी मंत्रियों को भी फाँसी दे दी जिन्होंने उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था।

- He signed a treaty with the English in 1684 realising the need for English weapons and gunpowder./ अंग्रेजी हथियारों और बारूद की ज़रूरत को समझते हुए, उन्होंने 1684 में अंग्रेजों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- Sambhaji also attempted to take on Mysore which was ruled by Chikkadevaraja Wodeyar./ संभाजी ने मैसूर पर भी कब्जा करने का प्रयास किया, जिस पर चिक्कदेवराज वोडेयार का शासन था।
- In 1687, the Battle of Wai was fought between the Maratha and the Mughal forces. The battle was fought in the dense forests of Wai and Mahabaleshwar. Even though the Mughals were defeated in the battle, the Marathas lost their commander-in-chief Hambirao Mohite/
- 1687 में, मराठा और मुगल सेनाओं के बीच वाई का युद्ध लड़ा गया। यह युद्ध वाई और महाबलेश्वर के घने जंगलों में लड़ा गया था। हालाँकि इस युद्ध में मुगलों की हार हुई, लेकिन मराठों ने अपने सेनापति हंबीराव मोहिते को खो दिया।

- **Sambhaji's position weakened and people in his own court and family spied upon him./** संभाजी की स्थिति कमजोर हो गई और उनके अपने दरबार और परिवार के लोगों ने उन पर जासूसी की। ✓
- **In February 1689, Sambhaji was captured along with 25 of his counsellors at Sangameshwar. /** फरवरी 1689 में, संभाजी को उनके 25 सलाहकारों के साथ संगमेश्वर में बंदी बना लिया गया।
- **Sambhaji was taken to Bahadurgad in Ahmednagar District by the Mughals. was humiliated and tortured before being executed./** संभाजी को मुगलों द्वारा अहमदनगर ज़िले के बहादुरगढ़ ले जाया गया। फाँसी देने से पहले उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया गया।
- **Sambhaji is also known as 'Dharmaveer'./** संभाजी को 'धर्मवीर' के नाम से भी जाना जाता है।



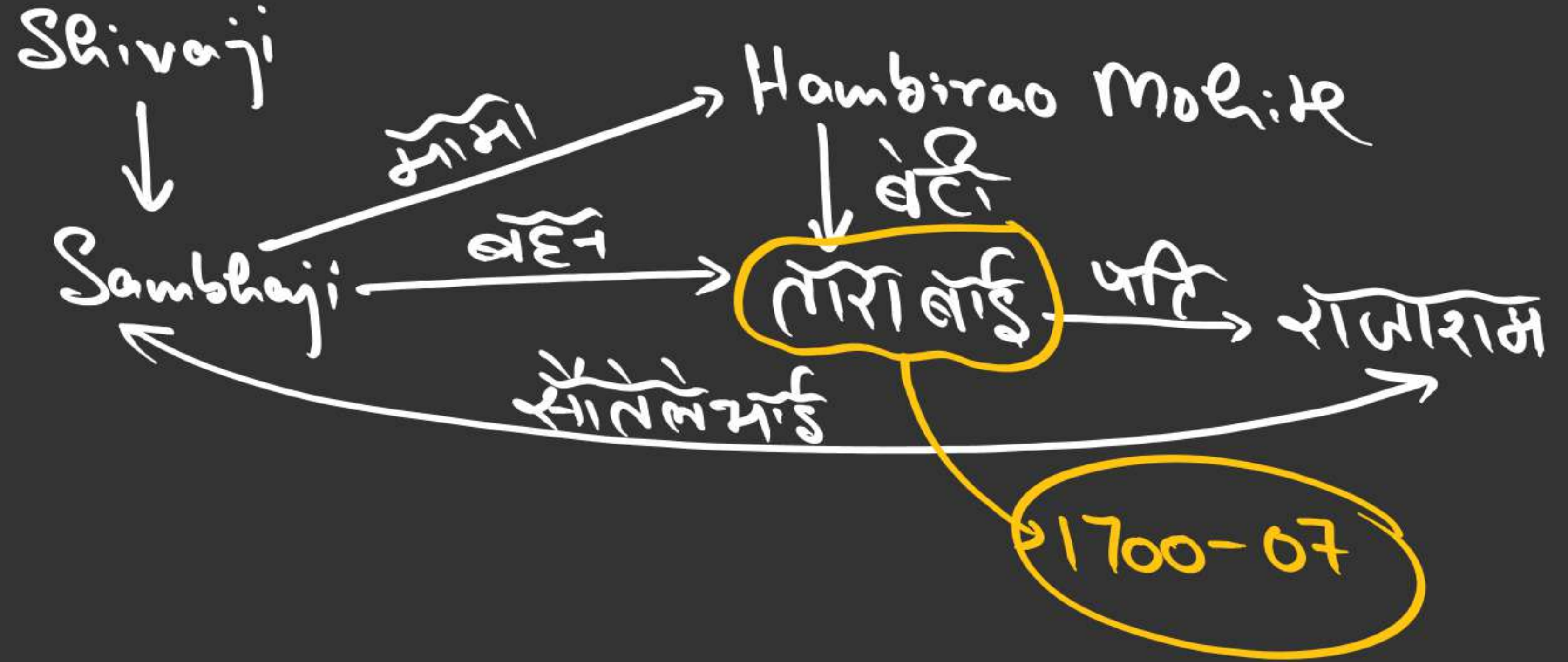
SHAHU (1707-1749)

1713

New PoSL

- Shahu's reign saw the rise of Peshwas & reducing Bhosale's to mere figureheads./ शाहू के शासनकाल में पेशवाओं का उदय हुआ और भोसले महज नाममात्र के रह गए।
- By the time of Rajaram II/Ram raja the power of Chhatrapati was almost overshadowed by that of Peshwa./ राजाराम द्वितीय/राम राजा के समय तक छत्रपति की शक्ति पेशवा की शक्ति से लगभग लुप्त हो गई थी।
- Battle of Khed (1707): It was fought between Shahu and Tarabai's forces, where Shahu emerged victorious, leading to his recognition as the Chhatrapati of the Marathas./खेड का युद्ध (1707): यह युद्ध शाहू और तराबाई की सेना के बीच हुआ था, जिसमें शाहू की विजय हुई और उन्हें मराठों के छत्रपति के रूप में मान्यता मिली।





BALAJI VISHWANATH (1713-1720):

FIRST PESHWA

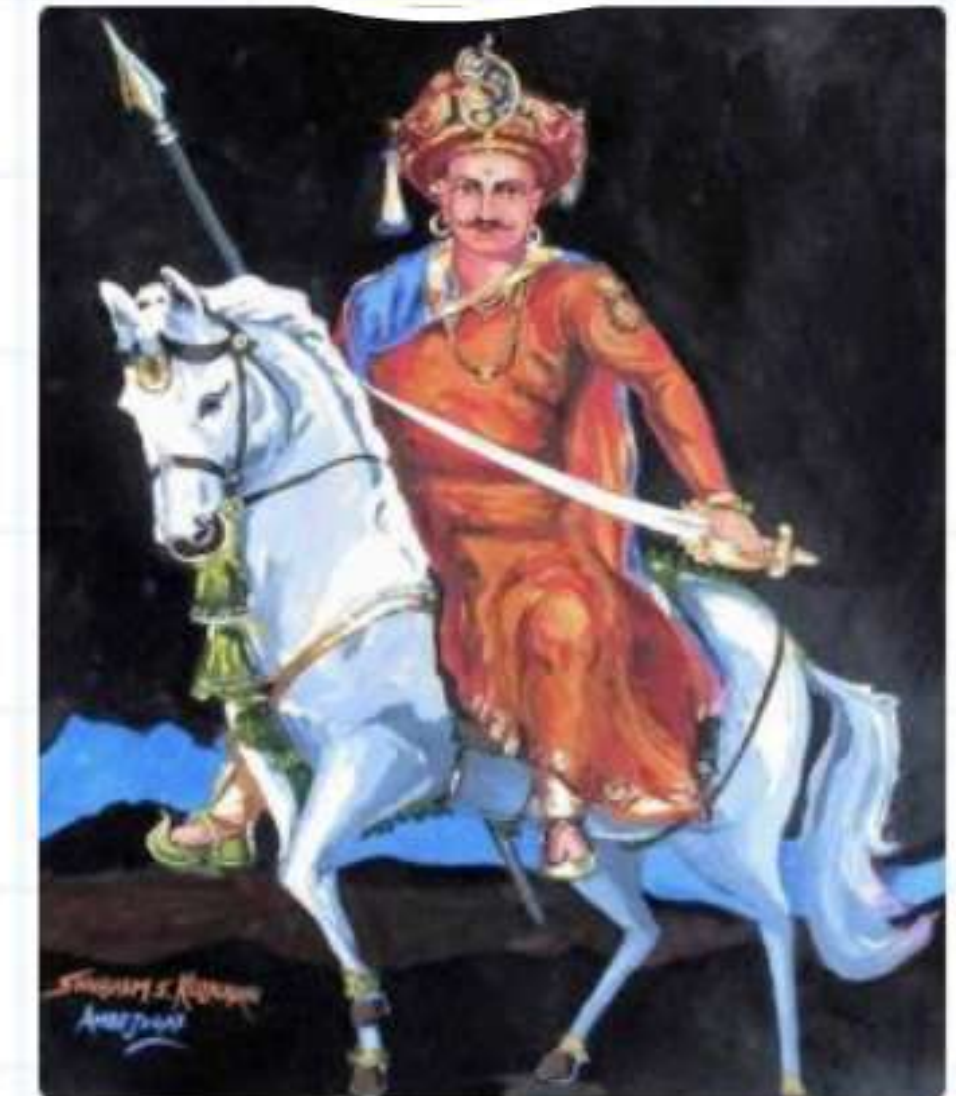
शुजा

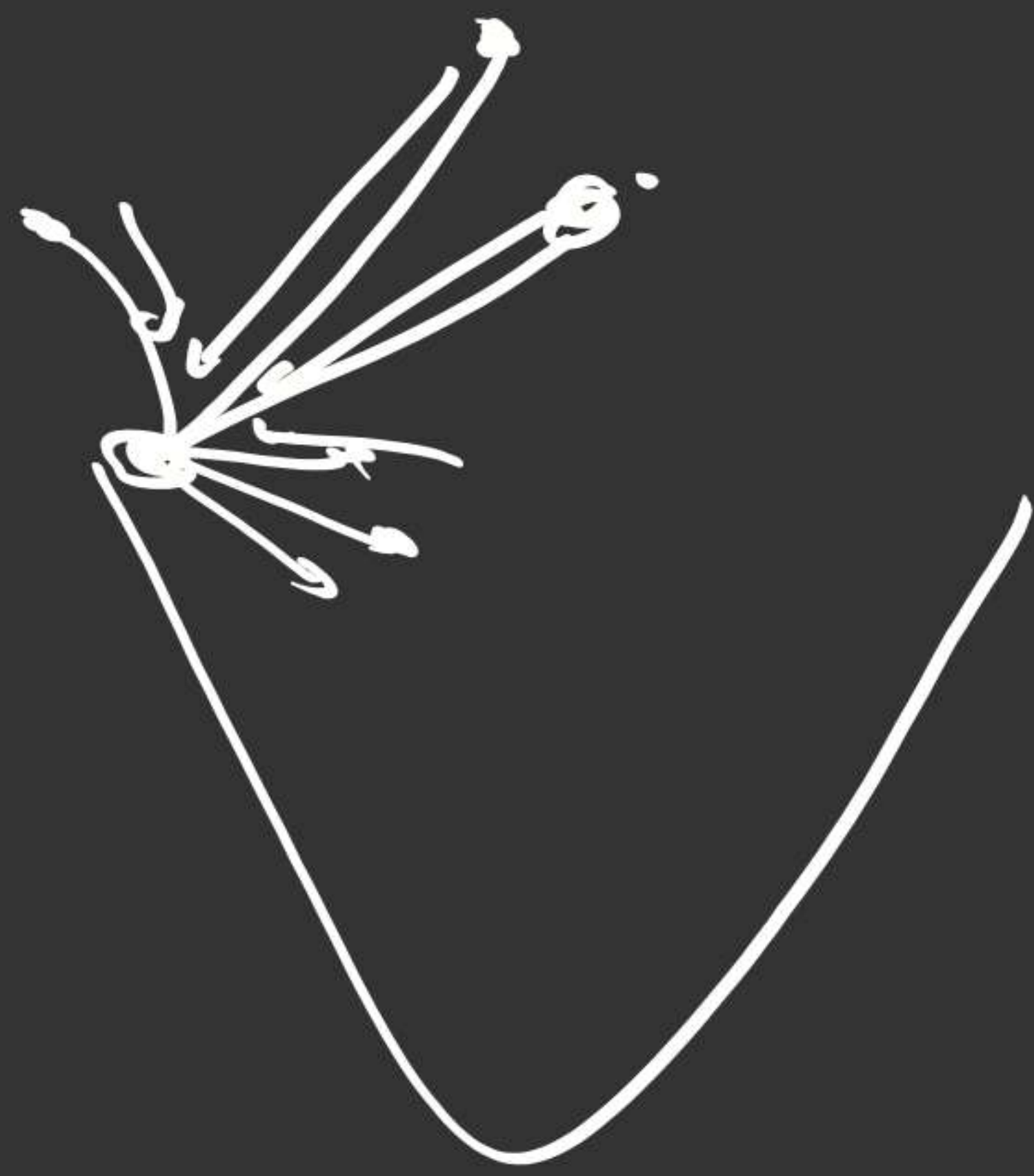


- He started his career as a small revenue official. He was given a of Sena Karte in 1708 by Shahu / उन्होंने अपना करियर एक छोटे राजस्व रूप में शुरू किया। 1708 में शाहू ने उन्हें सेना कर्ते की उपाधि दी।
- He became a Peshwa in 1713 & made the post most important and powerful as well as hereditary. / 1713 में वे पेशवा बने और इस पद को अत्यंत महत्वपूर्ण, शक्तिशाली और वंशानुगत बना दिया।
- In 1719, Balaji Viswanath obtained important rights from Mughal emperor Farukh Siyar, who recognized Shahu as king. / 1719 में, बालाजी विश्वनाथ ने मुगल सम्राट फारुख सियार से महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त किए, जिन्होंने शाहू को राजा के रूप में मान्यता दी।
- He helped Shahu become the Maratha king by gaining support from other Maratha leaders. / उन्होंने अन्य मराठा नेताओं का समर्थन प्राप्त करके शाहू को मराठा राजा बनने में मदद की।

Baji Rao I (1720-1740) 20th

- Baji Rao was the eldest son of Balaji Viswanath and became Peshwa at the young age of twenty. / बाजीराव बालाजी विश्वनाथ के सबसे बड़े पुत्र थे और बीस वर्ष की अल्पायु में पेशवा बन गए।
- Under his leadership, Maratha's power reached its peak. / उनके नेतृत्व में मराठा शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई। ✓
- He established a confederacy among the Maratha chiefs, granting each chief the autonomy to govern their designated territory independently. / उन्होंने मराठा सरदारों के बीच एक संघ स्थापित किया, जिसमें प्रत्येक सरदार को अपने निर्दिष्ट क्षेत्र पर स्वतंत्र रूप से शासन करने की स्वायत्तता प्रदान की गई।
- He said about Mughal: "Let us strike at the trunk of the withering tree and the branches will fall of themselves". / उन्होंने मुगलों के बारे में कहा: "हम मुरझाते हुए पेड़ के तने पर प्रहार करें और शाखाएँ अपने आप गिर जाएँगी।"





- This approach enabled numerous Maratha families to gain prominence and authority across India, including the Gaekwads in Baroda, the Bhonsles in Nagpur, the Holkars in Indore, the Scindias in Gwalior, and the Peshwas in Poona./ इस दृष्टिकोण ने कई मराठा परिवारों को पूरे भारत में प्रमुखता और अधिकार प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिनमें बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोसले, इंदौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया और पूना में पेशवा शामिल थे।
- During Bajirao I's reign, he is said to have fought over 40 battles, including the "Battle of Palkhed" (1728), the "Battle of Delhi" (1737), and the "Battle of Bhopal" (1737)./ कहा जाता है कि बाजीराव प्रथम के शासनकाल के दौरान, उन्होंने "पालखेड़ का युद्ध" (1728), "दिल्ली का युद्ध" (1737) और "भोपाल का युद्ध" (1737) सहित 40 से अधिक लड़ाइयाँ लड़ीं।



Balaji Baji Rao (1740-1761)

- **Balaji Baji Rao, also known as Nanasaheb, succeeded his father as Peshwa at just nineteen.** / बालाजी बाजी राव, जिन्हें नानासाहेब के नाम से भी जाना जाता है, मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में पेशवा बने।
- **In 1752, the Peshwa agreed to protect the Mughal Empire in exchange for collecting Chauth from northwest provinces and total revenue from Agra and Ajmer.** / 1752 में, पेशवा ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों से चौथ और आगरा व अजमेर से कुल राजस्व वसूलने के बदले में मुगल साम्राज्य की रक्षा करने पर सहमति व्यक्त की।
- **Defeat at the 3rd Battle of Panipat 1761 by Ahmad Shah Durrani checked the expansion of Marathas and fragmented the empire.** / 1761 में पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमद शाह दुर्रानी की हार ने मराठों के विस्तार को रोक दिया और साम्राज्य को खंडित कर दिया।
- **He and his son Vishwas Rao died in Panipat battle.** / पानीपत युद्ध में उनकी और उनके पुत्र विश्वास राव की मृत्यु हो गई।
- **Successor: Madhav Rao, Narayan Rao, Sawai Madhav Rao, Baji Rao II.** / माधव राव, नारायण राव, सवाई माधव राव, बाजी राव द्वितीय।

Ahmadshah Abdali

Ahmad Shah Durrani, also known as Ahmad Khan Abdali, was the founder of the Durrani Empire and is regarded as the founder of the modern state of Afghanistan.

अहमद शाह दुरानी, जिन्हें अहमद खान अब्दाली के नाम से भी जाना जाता है, दुरानी साम्राज्य के संस्थापक थे और उन्हें आधुनिक अफगानिस्तान राज्य का संस्थापक माना जाता है।



Ahmad shah Abdali

- **The primary object of his invasion was to plunder India's wealth. India, at that time, was known for its wealth. Like Muhammad of Ghor, the object of his invasions was to establish political hegemony in India as he was quite familiar with the weak Mughal administration of Delhi.** / उसके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति लूटना था। उस समय भारत अपनी संपत्ति के लिए जाना जाता था। मुहम्मद ग़ौर की तरह, उसके आक्रमणों का उद्देश्य भारत में राजनीतिक आधिपत्य स्थापित करना था क्योंकि वह दिल्ली के कमज़ोर मुग़ल प्रशासन से भली-भाँति परिचित था।
- **Both objectives were met through the raids (taking the wealth and destroying sacred places belonging to the Indians) and causing political issues in India.** / दोनों उद्देश्य छापे (भारतीयों की संपत्ति लूटना और उनके पवित्र स्थलों को नष्ट करना) और भारत में राजनीतिक समस्याएँ पैदा करके पूरे हुए।

Madhavrao I (1761-72)

- 16 yrs old Madhavrao I became the Peshwa of Maratha Empire. / 16 वर्षीय माधवराव प्रथम मराठा साम्राज्य के पेशवा बने।
- In 1763, He has defeated Nizam (Battle of Rakhsasbhuvan). / 1763 में उन्होंने निज़ाम (राक्षसबुहान का युद्ध) को हराया।
- In 1764, 1767, 1771, 1772 He defeated 'Haider Ali'. / 1764, 1767, 1771, 1772 में उन्होंने 'हैदर अली' को हराया।
- In 1772, Mahadji Sindhiya helped Mughals to establish in Delhi. On other hand took 40lakh rupees and Manikpur. / 1772 में महादजी सिंधिया ने मुगलों को दिल्ली में स्थापित होने में मदद की। बदले में उन्होंने 40 लाख रुपये और मानिकपुर ले लिया।

Mahadaji Shinde also spelled as Mahadji Scindia was a Maratha Statesman and ruler of Gwalior in Northern India. He was the fifth and the youngest son of Ranoji Rao Scindia, the founder of the Sindhia dynasty.

महादजी शिंदे, जिन्हें महादजी सिंधिया भी कहा जाता है, एक मराठा राजनेता और उत्तर भारत के ग्वालियर के शासक थे। वे सिंधिया राजवंश के संस्थापक राणोजी राव सिंधिया के पाँचवें और सबसे छोटे पुत्र थे।



Narayanrao (1772-73)

- **Madhavrao's brother Narayanrao became the Peshwa after the death of Madhavrao./** माधवराव की मृत्यु के बाद उनके भाई नारायणराव पेशवा बने।
- **But after 9 months, his uncle 'Raghunathrao' murdered him./** लेकिन नौ महीने बाद, उनके चाचा 'रघुनाथराव' ने उनकी हत्या कर दी।



Raghunath Raghoba (1773)

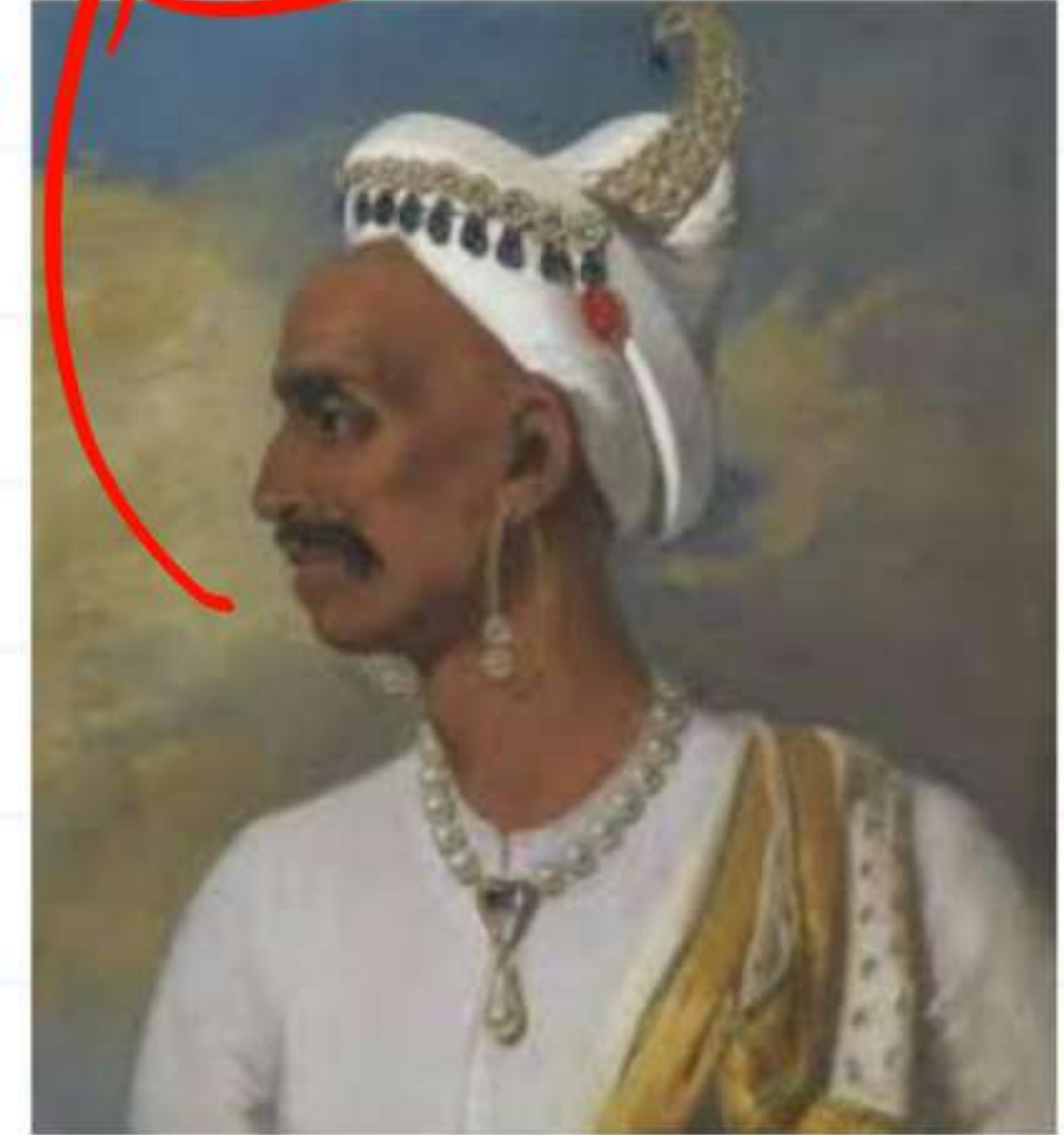
- Marathas did not accept Raghunath Raghoba as their Peshwa. / मराठों ने रघुनाथ राघोवा को अपना पेशवा स्वीकार नहीं किया।
- As a result, son of Narayanrao 'Madhavrao II' became new Peshwa. / परिणामस्वरूप, नारायणराव के पुत्र 'माधवराव द्वितीय' नए पेशवा बने।
- Raghunath Raghoba signed a 'Surat treaty' with Britishers in 1775 against Maratha Empire. / रघुनाथ राघोवा ने 1775 में मराठा साम्राज्य के विरुद्ध अंग्रेजों के साथ 'सूरत संधि' पर हस्ताक्षर किए।
- But Nana Fadnavis has signed 'Purandar Treaty (1776)' with Gov. Gen. Warren Hastings and consequently 'Surat Treaty' was suspended. / लेकिन नाना फडनवीस ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के साथ 'पुरंदर संधि (1776)' पर हस्ताक्षर किए और परिणामस्वरूप 'सूरत संधि' स्थगित कर दी गई।

2500 Soilders



Madhavrao Narayan (1774-96)

- During this period Madhavrao Narayan ruled with the pure help of 'Nana Fadnavis'. / इस अवधि के दौरान माधवराव नारायण ने नाना फड़नवीस की विशुद्ध सहायता से शासन किया।
- In 1796, He died. / 1796 में उनकी मृत्यु हो गई।



1800

Bajirao II (1796-1818)

- This was the period of decline of Maratha Empire. / यह मराठा साम्राज्य के पतन का समय था।
- In 1796 AD after the death of Nana Fadnavis, Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad fought with each other for territories. / 1796 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद, सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ ने क्षेत्रों के लिए आपस में युद्ध किया।
- In 1802, Bajirao II signed a 'treaty of Bassein' with Britishers and took the support of British Army in Poona. / 1802 में, बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के साथ बसेन की संधि पर हस्ताक्षर किए और पुणे में ब्रिटिश सेना का समर्थन प्राप्त किया।
- Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad opposed Bajirao II. But Lord Wellesley compelled them to accept treaty under subsidiary alliance. / सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ बाजीराव द्वितीय के खिलाफ थे। लेकिन लॉर्ड वेलेजली ने उन्हें मजबूर कर दिया कि वे सहायक संधि (Subsidiary Alliance) के तहत संधि स्वीकार करें।

Nana Sahib (1818-57)

1848-56

- After the death of Bajirao II, Nana Sahib ruled./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद नाना साहब ने शासन किया।
- After the death of Bajirao II, Nana Sahib has requested to British Government for Pension and Peshwa Post./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद, नाना साहब ने ब्रिटिश सरकार से पेंशन और पेशवा पद के लिए अनुरोध किया।
- Lord Dalhousie denied his request, and finally in 1857 revolt he took part against British Empire./ लॉर्ड डलहोजी ने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया और अंततः 1857 के विद्रोह में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भाग लिया।
- But unfortunately Maratha Empire came to an end./ लेकिन दुर्भाग्य से मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।



Anglo - Maratha wars

War / युद्ध	Year / वर्ष	Main Parties / प्रमुख पक्ष	Cause / कारण	Result / परिणाम
First Anglo-Maratha War पहला ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1775-1782	British vs Marathas अंग्रेज़ बनाम मराठा	British supported Raghunath Rao for Peshwaship अंग्रेज़ रघुनाथ राव को पेशवा बनाना चाहते थे	Maratha Victory मराठों की जीत Treaty of Salbai (1782) – British accepted Madhavrao II सलवै की संधि – अंग्रेज़ों ने माधवराव द्वितीय को स्वीकार किया
Second Anglo-Maratha War दूसरा ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1803-1805	British vs Scindia, Bhonsle, Holkar अंग्रेज़ बनाम सिंधिया, भोंसले, होल्कर	Internal conflicts; Treaty of Bassein by Bajirao II आंतरिक कलह; बाजीराव द्वितीय द्वारा बसेन की संधि	British Victory अंग्रेज़ों की जीत Large territories ceded मराठों ने बड़े क्षेत्र खोए
Third Anglo-Maratha War तीसरा ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1817-1818	British vs Peshwa Bajirao II & Maratha Chiefs अंग्रेज़ बनाम पेशवा बाजीराव-II और मराठा सरदार	Maratha attempt to revive power मराठों का शक्ति वापस पाने का प्रयास	Complete British Victory पूरी तरह अंग्रेज़ों की जीत End of Maratha Empire मराठा साम्राज्य का अंत; Peshwaship abolished

Decline of Maratha Empire

1. Lack of Strong Central Leadership / मज़बूत केंद्रीय नेतृत्व का अभाव :

- After Peshwa Madhavrao I's death (1772), no capable leaders./ पेशवा माधवराव प्रथम की मृत्यु (1772) के बाद, योग्य नेताओं का अभाव था।
- Successors like Raghunath Rao, Baji Rao II were weak and often engaged in internal quarrels./ रघुनाथ राव, बाजीराव द्वितीय जैसे उत्तराधिकारी कमजोर थे और अक्सर आंतरिक झगड़ों में उलझे रहते थे।

2. Internal Rivalry Among Maratha Chiefs / मराठा सरदारों के बीच आंतरिक प्रतिद्वंद्विता :

- Conflicts between major houses : Peshwas (Pune), Holkars (Indore), Scindias (Gwalior), Gaekwads (Baroda), Bhonsles (Nagpur)./ प्रमुख घरानों के बीच संघर्ष: पेशवा (पुणे), होल्कर (इंदौर), सिंधिया (ग्वालियर), गायकवाड़ (बड़ौदा), भोंसले (नागपुर)।
- Each tried to gain dominance, weakening unity./ प्रत्येक ने प्रभुत्व हासिल करने की कोशिश की, जिससे एकता कमजोर हुई।

1. Weak and decentralized Confederacy system / कमजोर और विकेन्द्रीकृत संघ व्यवस्था:

- **The Maratha Empire Functioned like a confederacy, not a unified empire./** मराठा साम्राज्य एक एकीकृत साम्राज्य की तरह नहीं, बल्कि एक संघ की तरह कार्य करता था।
- **Chiefs acted independent, often ignoring the Peshwa's orders./** सरदार स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे और अक्सर पेशवा के आदेशों की अवहेलना करते थे।

2 Defeat in the Third Battle of Panipat (1761) / पानीपत के तीसरे युद्ध (1761) में हार :

- **Huge loss of manpower and leadership./** जनशक्ति और नेतृत्व का भारी नुकसान।
- **Destroyed prestige and weakened military morale./** प्रतिष्ठा का हास हुआ और सैन्य मनोबल कमजोर हुआ। ✓
- **Gave enemies (British, Mysore, Afghans) a chance to rise./** दुश्मनों (अंग्रेजों, मैसूर, अफ़गानों) को उभरने का मौका मिला। ✓

1. British Interference & Superior Diplomacy / ब्रिटिश हस्तक्षेप और श्रेष्ठ कूटनीति :

- The British exploited Maratha rivalries through treaties and alliances (e.g. treaty of surat, salbai, Bassein, Subsidiary alliance, doctrine of lapse)/ अंग्रेजों ने संधियों और गठबंधनों (जैसे सूरत, सालबाई, बेसिन की संधि, सहायक संधि, राज्य हड़प नीति) के माध्यम से मराठा प्रतिद्वंद्विता का फायदा उठाया।

2. Treaty of Bassein (1802) / बेसिन की संधि (1802):

- Peshwa Baji Rao II accepted British protection./ पेशवा बाजीराव द्वितीय ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार कर लिया।
- Considered a national humiliating act/ इसे राष्ट्रीय अपमान माना गया।
- It divided Maratha chiefs and led to the Second Anglo- Maratha war(1803-05) इसने मराठा सरदारों को विभाजित कर दिया और द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-05) का कारण बना।

7. Inferior Military System / निम्न सैन्य व्यवस्था:

- Relied on old-style cavalry and untrained troops./ पुरानी शैली की घुड़सवार सेना और अशिक्षित सैनिकों पर निर्भर।
- British had modern-infantry, artillery, and better training. / अंग्रेजों के पास आधुनिक पैदल सेना, तोपखाना और बेहतर प्रशिक्षण था।
- Marathas lacked unified command and standardized armies./ मराठों के पास एकीकृत कमान और मानकीकृत सेनाओं का अभाव था।

1. Financial Weakness / वित्तीय कमजोरी:

- Heavy dependence on Chauth and Sardeshmukhi revenue from other states./ अन्य राज्यों से मिलने वाले चौथ और सरदेशमुखी राजस्व पर अत्यधिक निर्भरता।
- After losing territories and wars, income reduced sharply./ क्षेत्रों और युद्धों को खोने के बाद, आय में तेज़ी से कमी आई।
- Continuous wars drained treasury./ लगातार युद्धों से राजकोष खाली हो गया।

9. Rise of Strong Rivals / प्रबल प्रतिद्वंद्वियों का उदय:

- Hyder Ali and Tipu Sultan in Mysore. / मैसूर में हैदर अली और टीपू सुल्तान।
- Nizam of Hyderabad / हैदराबाद के निज़ाम
- British, all challenged Maratha supremacy at the same time. / अंग्रेजों, सभी ने एक ही समय में मराठा वर्चस्व को चुनौती दी।

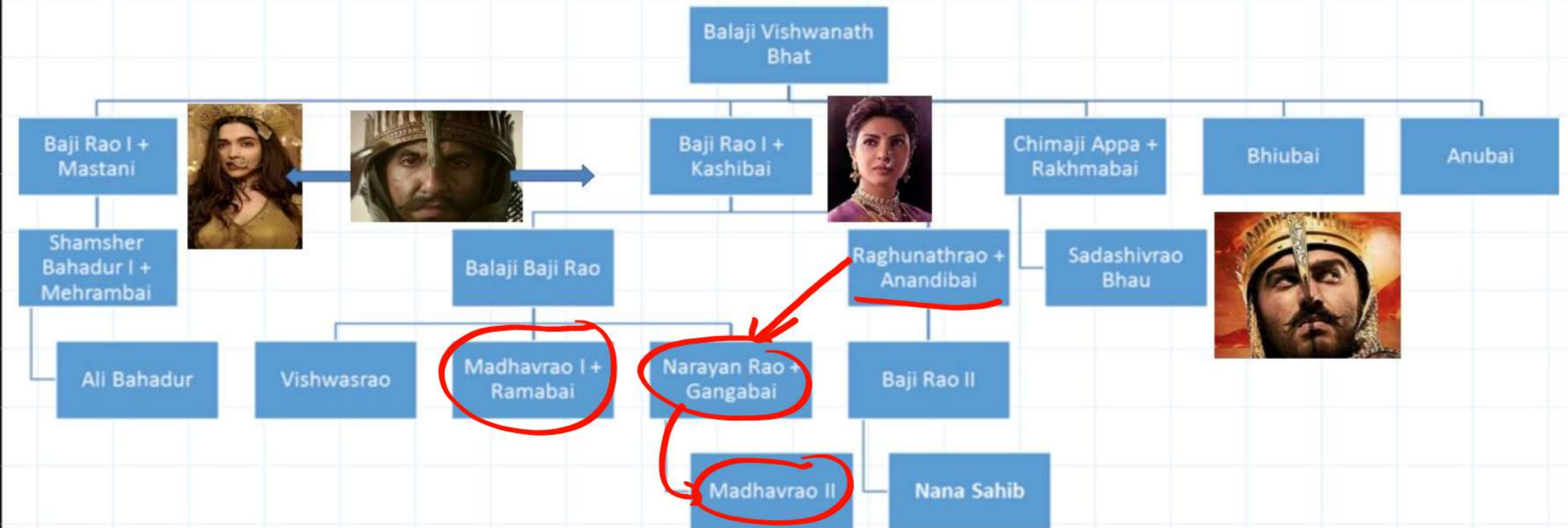
1. Absence of National Vision / राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभाव :

- Chiefs focused on personal territories, not building a unified nation or centralized empire. / प्रमुखों ने एकीकृत राष्ट्र या केंद्रीकृत साम्राज्य के निर्माण के बजाय व्यक्तिगत क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया।

END → mughaal



Y U U



SHIVAJI'S ADMINISTRATION



- He divided the territory into three provinces. Provinces were divided into Prants which were subdivided into Parganas or Tarafs./ उन्होंने क्षेत्र को तीन प्रांतों में विभाजित किया। प्रांतों को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें परगना या तरफ़ में विभाजित किया गया था।
- Shivaji had well organized Army & Navy. The regular army was called Paga, while the loose auxiliaries called silahdars & were supervised by havildars./ शिवाजी के पास अच्छी तरह से संगठित सेना और नौसेना थी। नियमित सेना को पगा कहा जाता था, जबकि ढीले सहायक बलों को सिलहदार कहा जाता था और उनकी देखरेख हवलदार करते थे।
- He was assisted by a council of ministers called "Ashtapradhan" Mandal./ उन्हें "अष्टप्रधान" मंडल नामक मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।

Ashtapradhan

Post / पद	Function / कार्य
• Peshwa (Mukhya Pradhan) / पेशवा (मुख्य प्रधान)	Finance & general administration. Later became prime minister / वित्त व सामान्य प्रशासन। बाद में प्रधान मंत्री बने
• Senapati (Sar-i-Naubat) / सेनापति (सर-ए-नौबत)	Military commander / सैन्य प्रमुख
• Majumdar (Amatya) / माजुमदार (अमात्य)	Accountant General / महालेखाकार
• Waqeanavis (Mantri) / वक्केनवीस (मंत्री)	Intelligence, posts and household affairs / खुफिया कार्य, डाक व आंतरिक कार्य
• Sachiv (Surnavis) / सचिव (सुरनवीस)	Correspondence / पत्राचार
• Dabir (Sumant) / दाबीर (सुमंत)	Foreign minister & Master of ceremonies / विदेश मंत्री एवं समारोह प्रमुख
• Nyayadhish / न्यायाधीश	Justice / न्याय
• Panditrao (Sadar) / पंडितराव (सदार)	High Priest, managing internal religious matters / उच्च पुजारी, धार्मिक मामलों का प्रमुख

Revenue system of Maratha Empire

- The revenue system of Shivaji was based on that of Malik Amber of Ahmednagar./ शिवाजी की राजस्व प्रणाली अहमदनगर के मलिक अंबर की प्रणाली पर आधारित थी।
- Jagirdari abolished and introduced Ryotwari system./ जागीरदारी प्रथा समाप्त की गई और उसकी जगह रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गई।
- Land was measured using measuring rod called Kathi./ भूमि का मापन काठी नामक मापदंड से किया जाता था।
- Discouraged revenue farming/ शिवाजी ने राजस्व खेती को हतोत्साहित किया।
- Chauth (1/4th of land revenue) paid to Marathas to avoid Maratha raid./ चौथ (भूमि राजस्व का 1/4 हिस्सा) मराठों को मराठा छापों से बचने के लिए दिया जाता था।
- Sardeshmukhi was additional levy of ten percent (1/10 of standard land revenue) on lands over which Marathas claimed hereditary rights./ सरदेशमुखी एक अतिरिक्त 10% कर था (मानक भूमि राजस्व का 1/10), उन भूमियों पर जिन पर मराठों का पैतृक अधिकार माना जाता था।
- Reduced the power of existing Deshmukhs and Kulkarnis./ शिवाजी ने मौजूदा देशमुखों और कुलकर्णियों की शक्ति कम कर दी।
- Appointed own revenue officer called Karkuns./ शिवाजी ने अपने राजस्व अधिकारी कारकून नियुक्त किए।

Sambhaji Maharaj (1680 - 1689)

- Sambhaji was the **son of Shivaji Maharaj**, the first ruler/Chhatrapati of the Maratha Empire and his first wife **Saibai**./ संभाजी, मराठा साम्राज्य के प्रथम शासक/छत्रपति शिवाजी महाराज और उनकी पहली पत्नी सईबाई के पुत्र थे।
- Losing his mother at the age of two, he was raised by Shivaji's mother Jijabai. When he was nine years of age, he was sent to live as a political hostage at the palace of Raja Jai Singh I of Amber. Shivaji had to do this as surety that he would comply with the Treaty of Purandar he signed with the Mughals in 1665./ दो वर्ष की आयु में अपनी माँ को खो देने के बाद, उनका पालन-पोषण शिवाजी की माँ जीजाबाई ने किया। जब वे नौ वर्ष के थे, तब उन्हें आमेर के राजा जय सिंह प्रथम के महल में एक राजनीतिक बंधक के रूप में रहने के लिए भेज दिया गया था। शिवाजी को यह ज़मानत के रूप में करनी पड़ी थी कि वे 1665 में मुगलों के साथ की गई पुरंदर की संधि का पालन करेंगे।
- Sambhaji was thus a Mansabdar of the Mughals. In 1666, Shivaji and Sambhaji presented themselves at the court of the Mughal Emperor Aurangzeb. Aurangzeb put the duo under house arrest. Two months later, father and son escaped./ इस प्रकार संभाजी मुगलों के मनसबदार थे। 1666 में, शिवाजी और संभाजी मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए। औरंगजेब ने दोनों को नजरबंद कर दिया। दो महीने बाद, पिता-पुत्र भाग निकले।



1562 → Treaty of Ameer

← Bharmal → Akbar

Jai Singh I arrested Sambhaji (9 Yr.)

Cousin

✓ सोयराबाई

↑ माँ

✓ Rajaram I

अमोना 1665

↓
1666

↓
1678
1680



→ Sambhaji Maharaj

1680 → दत्तपति



1684 → Treaty with EIC
for हरिपार

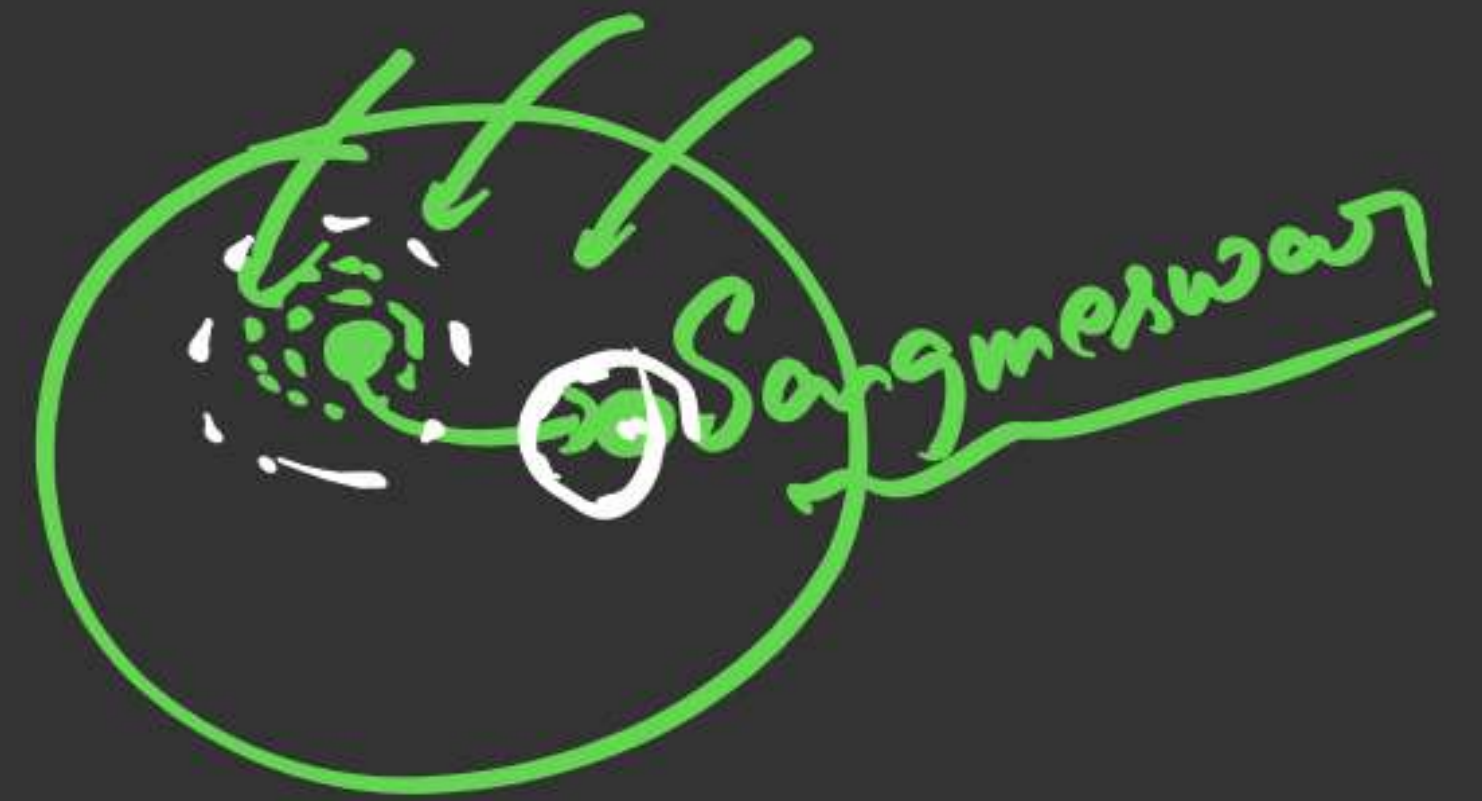


1687 → वॉर का पूरा



feb

1689 →



- Both sides reconciled following which there was a brief period of friendship between 1666 and 1670. During this period, Sambhaji fought alongside his father to support the Mughals against the Bijapur Sultan. / दोनों पक्षों में सुलह हो गई जिसके बाद 1666 और 1670 के बीच कुछ समय के लिए मित्रता का दौर चला। इस दौरान, संभाजी ने अपने पिता के साथ मिलकर बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुग़लों का समर्थन किया।



- In 1678, Shivaji kept Sambhaji imprisoned at the Panhala Fort to curtail his bad and irresponsible behaviour. / 1678 में, शिवाजी ने संभाजी के बुरे और गैर-ज़िम्मेदाराना व्यवहार को रोकने के लिए उन्हें पन्हाला किले में कैद कर लिया।



- After Shivaji died in April 1680, there were attempts by some ministers in the Maratha court to crown Sambhaji's half-brother Rajaram as the king. Rajaram was Shivaji's second son from his wife Soyarabai./ अप्रैल 1680 में शिवाजी की मृत्यु के बाद, मराठा दरबार के कुछ मंत्रियों ने संभाजी के सौतेले भाई राजाराम को राजा बनाने का प्रयास किया। राजाराम, शिवाजी की पत्नी सोयराबाई से उत्पन्न दूसरे पुत्र थे।
- Sambhaji, however, got wind of the plot and soon took possession of the forts at Panhala and Raigad. He was crowned the Chhatrapati on 20th July 1680. Soon after, he imprisoned Rajaram, Soyarabai and Rajaram's wife. He also executed all the ministers who had conspired against him./ हालाँकि, संभाजी को इस षड्यंत्र की भनक लग गई और उन्होंने शीघ्र ही पन्हाला और रायगढ़ के किलों पर कब्जा कर लिया। 20 जुलाई 1680 को उन्हें छत्रपति का ताज पहनाया गया। इसके तुरंत बाद, उन्होंने राजाराम, सोयराबाई और राजाराम की पत्नी को कैद कर लिया। उन्होंने उन सभी मंत्रियों को भी फाँसी दे दी जिन्होंने उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था।

- He signed a treaty with the English in 1684 realising the need for English weapons and gunpowder./ अंग्रेजी हथियारों और बारूद की ज़रूरत को समझते हुए, उन्होंने 1684 में अंग्रेजों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- Sambhaji also attempted to take on Mysore which was ruled by Chikkadevaraja Wodeyar./ संभाजी ने मैसूर पर भी कब्जा करने का प्रयास किया, जिस पर चिक्कदेवराज वोडेयार का शासन था।
- In 1687, the Battle of Wai was fought between the Maratha and the Mughal forces. The battle was fought in the dense forests of Wai and Mahabaleshwar. Even though the Mughals were defeated in the battle, the Marathas lost their commander-in-chief Hambirao Mohite/
- 1687 में, मराठा और मुगल सेनाओं के बीच वाई का युद्ध लड़ा गया। यह युद्ध वाई और महाबलेश्वर के घने जंगलों में लड़ा गया था। हालाँकि इस युद्ध में मुगलों की हार हुई, लेकिन मराठों ने अपने सेनापति हंबीराव मोहिते को खो दिया।

- **Sambhaji's position weakened and people in his own court and family spied upon him./** संभाजी की स्थिति कमजोर हो गई और उनके अपने दरबार और परिवार के लोगों ने उन पर जासूसी की। ✓
- **In February 1689, Sambhaji was captured along with 25 of his counsellors at Sangameshwar. /** फरवरी 1689 में, संभाजी को उनके 25 सलाहकारों के साथ संगमेश्वर में बंदी बना लिया गया।
- **Sambhaji was taken to Bahadurgad in Ahmednagar District by the Mughals. was humiliated and tortured before being executed./** संभाजी को मुगलों द्वारा अहमदनगर ज़िले के बहादुरगढ़ ले जाया गया। फाँसी देने से पहले उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया गया।
- **Sambhaji is also known as 'Dharmaveer'./** संभाजी को 'धर्मवीर' के नाम से भी जाना जाता है।



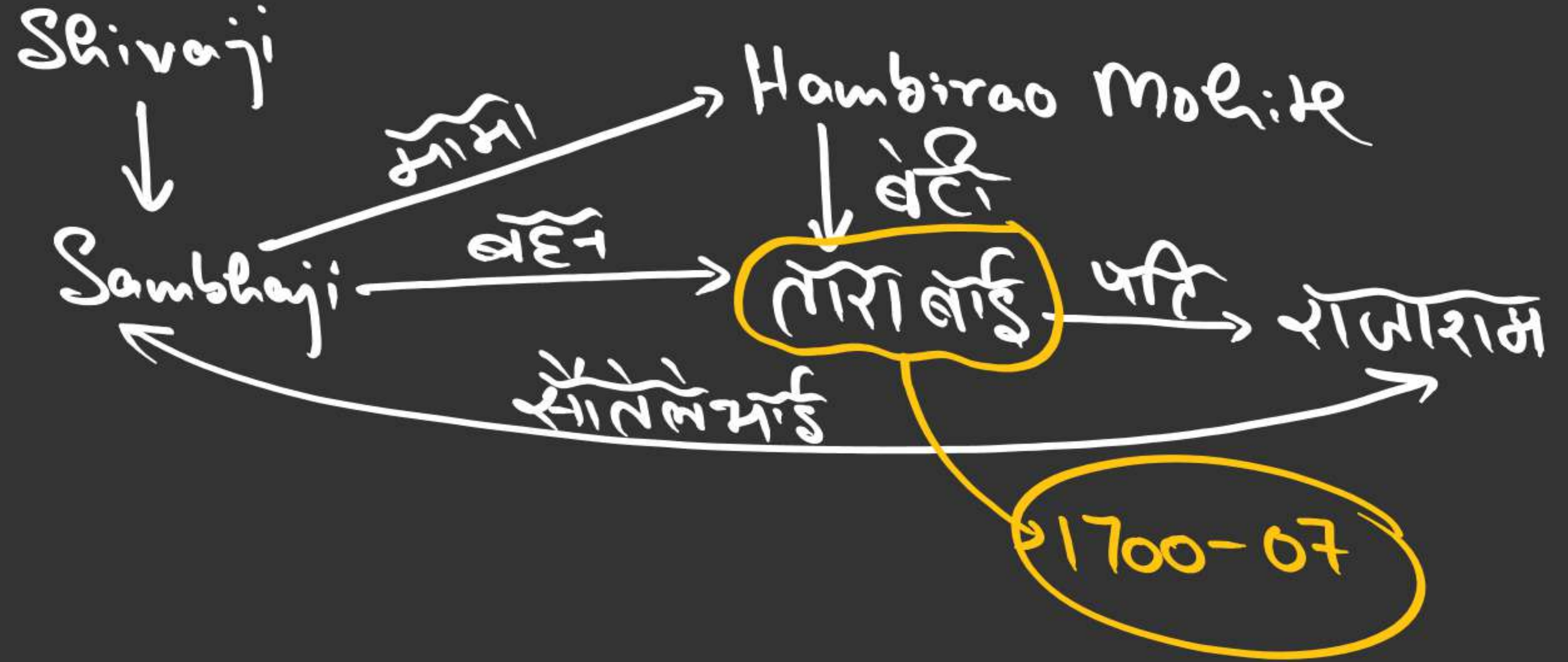
SHAHU (1707-1749)

1713

New Post

- Shahu's reign saw the rise of Peshwas & reducing Bhosale's to mere figureheads./ शाहू के शासनकाल में पेशवाओं का उदय हुआ और भोसले महज नाममात्र के रह गए।
- By the time of Rajaram II/Ram raja the power of Chhatrapati was almost overshadowed by that of Peshwa./ राजाराम द्वितीय/राम राजा के समय तक छत्रपति की शक्ति पेशवा की शक्ति से लगभग लुप्त हो गई थी।
- Battle of Khed (1707): It was fought between Shahu and Tarabai's forces, where Shahu emerged victorious, leading to his recognition as the Chhatrapati of the Marathas./खेड का युद्ध (1707): यह युद्ध शाहू और तराबाई की सेना के बीच हुआ था, जिसमें शाहू की विजय हुई और उन्हें मराठों के छत्रपति के रूप में मान्यता मिली।





BALAJI VISHWANATH (1713-1720):

FIRST PESHWA

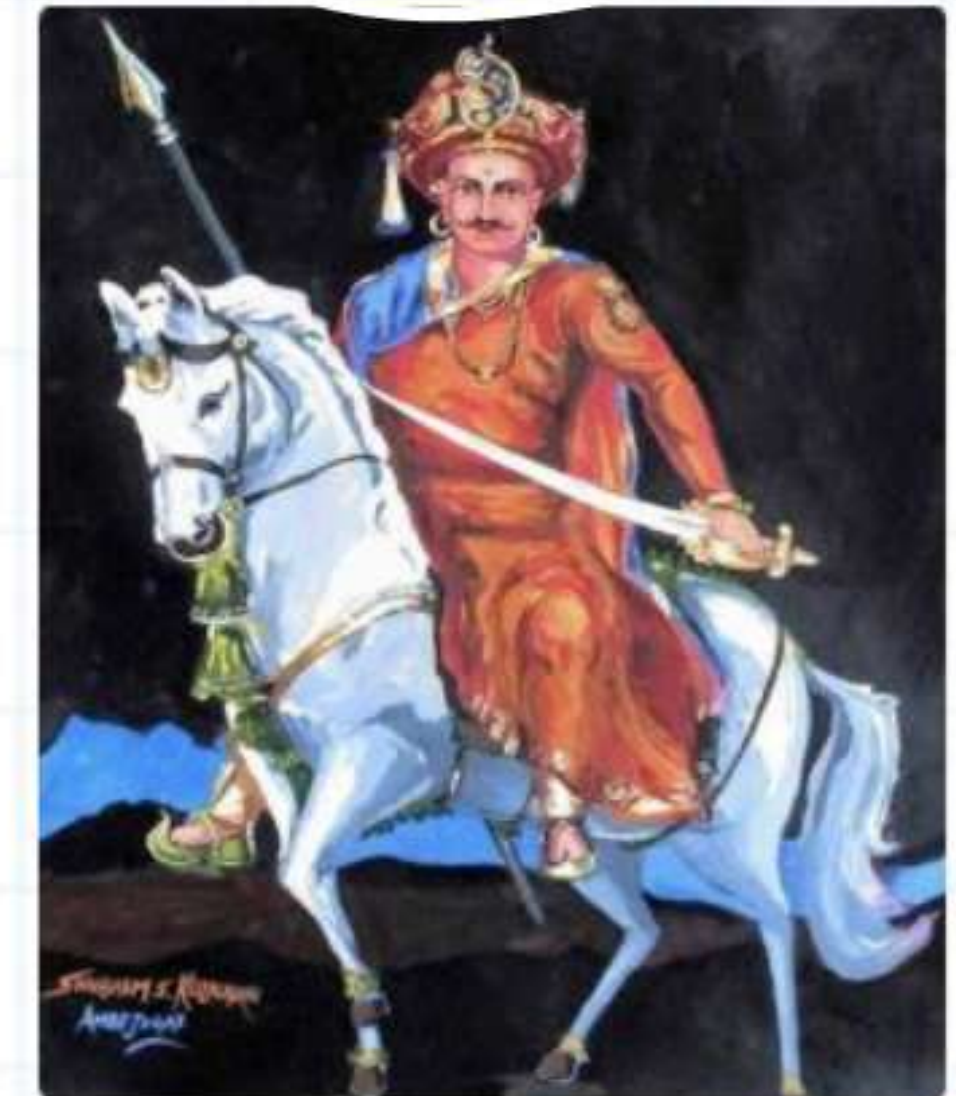
शहा

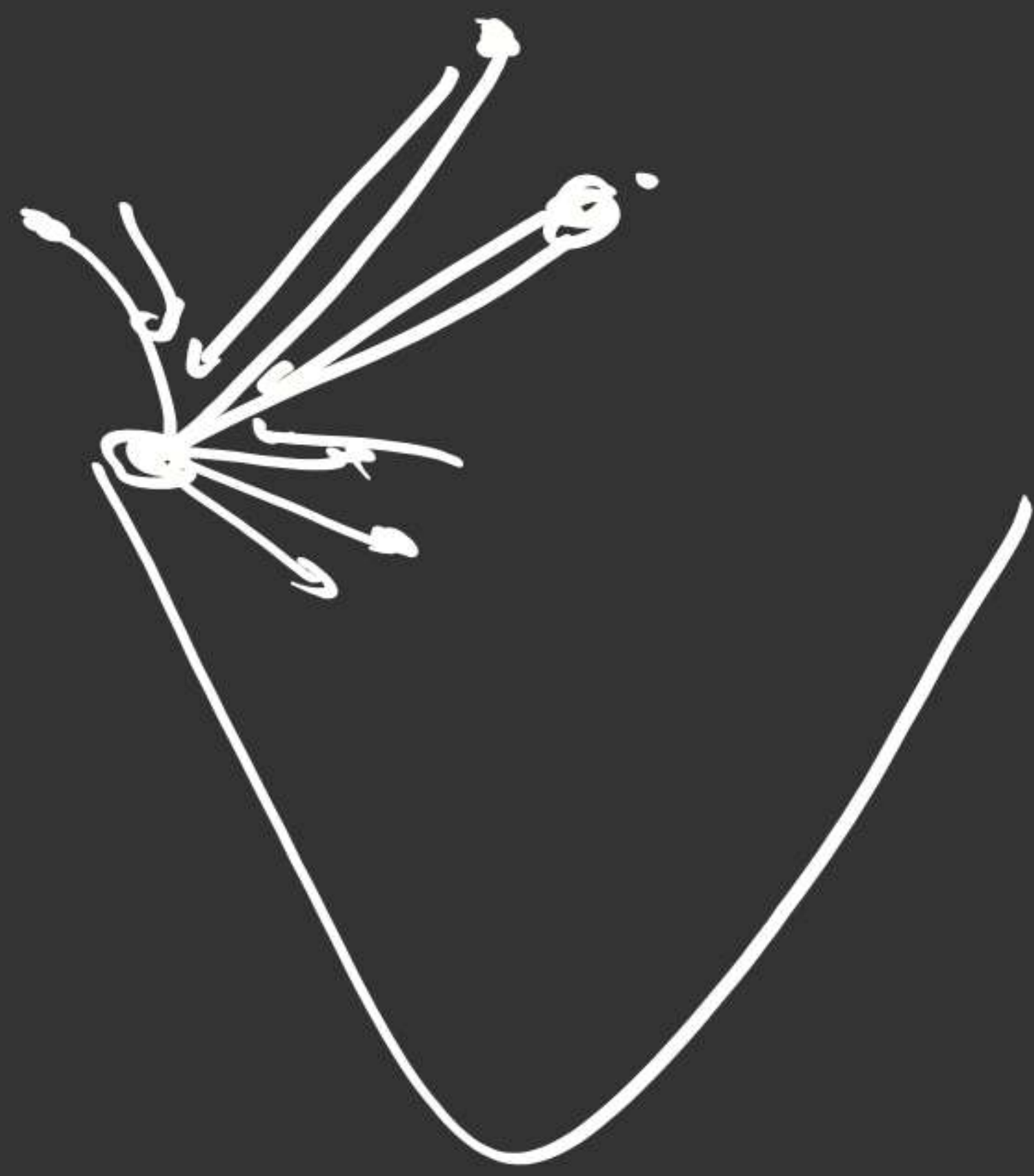


- He started his career as a small revenue official. He was given a of Sena Karte in 1708 by Shahu / उन्होंने अपना करियर एक छोटे राजस्व रूप में शुरू किया। 1708 में शाहू ने उन्हें सेना कर्ते की उपाधि दी।
- He became a Peshwa in 1713 & made the post most important and powerful as well as hereditary. / 1713 में वे पेशवा बने और इस पद को अत्यंत महत्वपूर्ण, शक्तिशाली और वंशानुगत बना दिया।
- In 1719, Balaji Viswanath obtained important rights from Mughal emperor Farukh Siyar, who recognized Shahu as king. / 1719 में, बालाजी विश्वनाथ ने मुगल सम्राट फारुख सियार से महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त किए, जिन्होंने शाहू को राजा के रूप में मान्यता दी।
- He helped Shahu become the Maratha king by gaining support from other Maratha leaders. / उन्होंने अन्य मराठा नेताओं का समर्थन प्राप्त करके शाहू को मराठा राजा बनने में मदद की।

Baji Rao I (1720-1740) 20th

- Baji Rao was the eldest son of Balaji Viswanath and became Peshwa at the young age of twenty. / बाजीराव बालाजी विश्वनाथ के सबसे बड़े पुत्र थे और बीस वर्ष की अल्पायु में पेशवा बन गए।
- Under his leadership, Maratha's power reached its peak. / उनके नेतृत्व में मराठा शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई। ✓
- He established a confederacy among the Maratha chiefs, granting each chief the autonomy to govern their designated territory independently. / उन्होंने मराठा सरदारों के बीच एक संघ स्थापित किया, जिसमें प्रत्येक सरदार को अपने निर्दिष्ट क्षेत्र पर स्वतंत्र रूप से शासन करने की स्वायत्तता प्रदान की गई।
- He said about Mughal: "Let us strike at the trunk of the withering tree and the branches will fall of themselves". / उन्होंने मुगलों के बारे में कहा: "हम मुरझाते हुए पेड़ के तने पर प्रहार करें और शाखाएँ अपने आप गिर जाएँगी।"





- This approach enabled numerous Maratha families to gain prominence and authority across India, including the Gaekwads in Baroda, the Bhonsles in Nagpur, the Holkars in Indore, the Scindias in Gwalior, and the Peshwas in Poona./ इस दृष्टिकोण ने कई मराठा परिवारों को पूरे भारत में प्रमुखता और अधिकार प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिनमें बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोसले, इंदौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया और पूना में पेशवा शामिल थे।
- During Bajirao I's reign, he is said to have fought over 40 battles, including the "Battle of Palkhed" (1728), the "Battle of Delhi" (1737), and the "Battle of Bhopal" (1737)./ कहा जाता है कि बाजीराव प्रथम के शासनकाल के दौरान, उन्होंने "पालखेड़ का युद्ध" (1728), "दिल्ली का युद्ध" (1737) और "भोपाल का युद्ध" (1737) सहित 40 से अधिक लड़ाइयाँ लड़ीं।



Balaji Baji Rao (1740-1761)

- **Balaji Baji Rao, also known as Nanasaheb, succeeded his father as Peshwa at just nineteen.** / बालाजी बाजी राव, जिन्हें नानासाहेब के नाम से भी जाना जाता है, मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में पेशवा बने।
- **In 1752, the Peshwa agreed to protect the Mughal Empire in exchange for collecting Chauth from northwest provinces and total revenue from Agra and Ajmer.** / 1752 में, पेशवा ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों से चौथ और आगरा व अजमेर से कुल राजस्व वसूलने के बदले में मुगल साम्राज्य की रक्षा करने पर सहमति व्यक्त की।
- **Defeat at the 3rd Battle of Panipat 1761 by Ahmad Shah Durrani checked the expansion of Marathas and fragmented the empire.** / 1761 में पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमद शाह दुर्रानी की हार ने मराठों के विस्तार को रोक दिया और साम्राज्य को खंडित कर दिया।
- **He and his son Vishwas Rao died in Panipat battle.** / पानीपत युद्ध में उनकी और उनके पुत्र विश्वास राव की मृत्यु हो गई।
- **Successor: Madhav Rao, Narayan Rao, Sawai Madhav Rao, Baji Rao II.** / माधव राव, नारायण राव, सवाई माधव राव, बाजी राव द्वितीय।

Ahmadshah Abdali

Ahmad Shah Durrani, also known as Ahmad Khan Abdali, was the founder of the Durrani Empire and is regarded as the founder of the modern state of Afghanistan.

अहमद शाह दुरानी, जिन्हें अहमद खान अब्दाली के नाम से भी जाना जाता है, दुरानी साम्राज्य के संस्थापक थे और उन्हें आधुनिक अफगानिस्तान राज्य का संस्थापक माना जाता है।



Ahmad shah Abdali

- The primary object of his invasion was to plunder India's wealth. India, at that time, was known for its wealth. Like Muhammad of Ghor, the object of his invasions was to establish political hegemony in India as he was quite familiar with the weak Mughal administration of Delhi./ उसके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति लूटना था। उस समय भारत अपनी संपत्ति के लिए जाना जाता था। मुहम्मद ग़ौर की तरह, उसके आक्रमणों का उद्देश्य भारत में राजनीतिक आधिपत्य स्थापित करना था क्योंकि वह दिल्ली के कमज़ोर मुग़ल प्रशासन से भली-भाँति परिचित था।
- Both objectives were met through the raids (taking the wealth and destroying sacred places belonging to the Indians) and causing political issues in India. / दोनों उद्देश्य छापे (भारतीयों की संपत्ति लूटना और उनके पवित्र स्थलों को नष्ट करना) और भारत में राजनीतिक समस्याएँ पैदा करके पूरे हुए।

Madhavrao I (1761-72)

- 16 yrs old Madhavrao I became the Peshwa of Maratha Empire. / 16 वर्षीय माधवराव प्रथम मराठा साम्राज्य के पेशवा बने।
- In 1763, He has defeated Nizam (Battle of Rakhsasbhuvan). / 1763 में उन्होंने निज़ाम (राक्षसबुहान का युद्ध) को हराया।
- In 1764, 1767, 1771, 1772 He defeated 'Haider Ali'. / 1764, 1767, 1771, 1772 में उन्होंने 'हैदर अली' को हराया।
- In 1772, Mahadji Sindhiya helped Mughals to establish in Delhi. On other hand took 40lakh rupees and Manikpur. / 1772 में महादजी सिंधिया ने मुगलों को दिल्ली में स्थापित होने में मदद की। बदले में उन्होंने 40 लाख रुपये और मानिकपुर ले लिया।

Mahadaji Shinde also spelled as Mahadji Scindia was a Maratha Statesman and ruler of Gwalior in Northern India. He was the fifth and the youngest son of Ranoji Rao Scindia, the founder of the Sindhia dynasty.

महादजी शिंदे, जिन्हें महादजी सिंधिया भी कहा जाता है, एक मराठा राजनेता और उत्तर भारत के ग्वालियर के शासक थे। वे सिंधिया राजवंश के संस्थापक राणोजी राव सिंधिया के पाँचवें और सबसे छोटे पुत्र थे।



Narayanrao (1772-73)

- **Madhavrao's brother Narayanrao became the Peshwa after the death of Madhavrao./** माधवराव की मृत्यु के बाद उनके भाई नारायणराव पेशवा बने।
- **But after 9 months, his uncle 'Raghunathrao' murdered him./** लेकिन नौ महीने बाद, उनके चाचा 'रघुनाथराव' ने उनकी हत्या कर दी।



Raghunath Raghoba (1773)

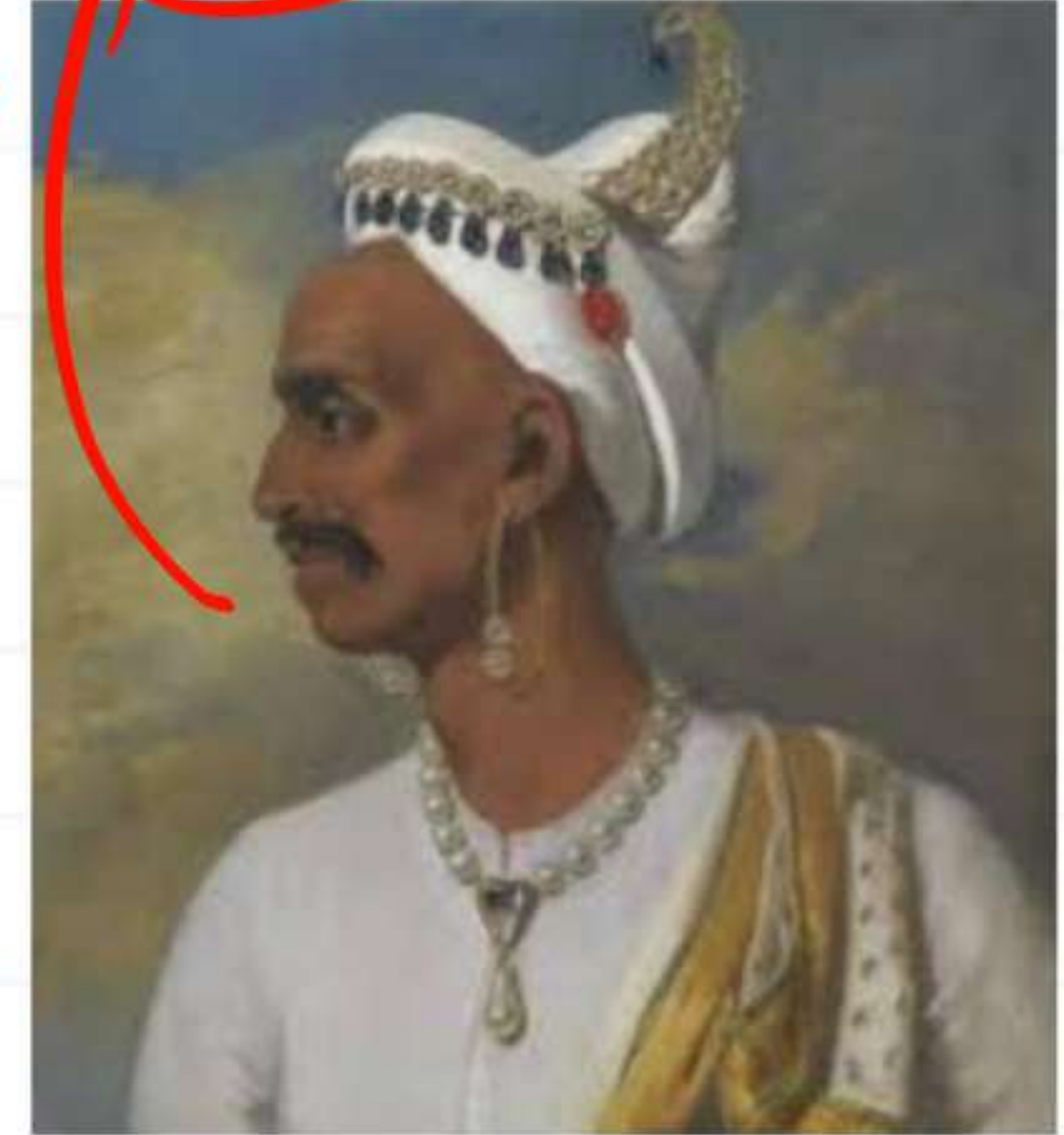
- Marathas did not accept Raghunath Raghoba as their Peshwa. / मराठों ने रघुनाथ राघोवा को अपना पेशवा स्वीकार नहीं किया।
- As a result, son of Narayanrao 'Madhavrao II' became new Peshwa. / परिणामस्वरूप, नारायणराव के पुत्र 'माधवराव द्वितीय' नए पेशवा बने।
- Raghunath Raghoba signed a 'Surat treaty' with Britishers in 1775 against Maratha Empire. / रघुनाथ राघोवा ने 1775 में मराठा साम्राज्य के विरुद्ध अंग्रेजों के साथ 'सूरत संधि' पर हस्ताक्षर किए।
- But Nana Fadnavis has signed 'Purandar Treaty (1776)' with Gov. Gen. Warren Hastings and consequently 'Surat Treaty' was suspended. / लेकिन नाना फडनवीस ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के साथ 'पुरंदर संधि (1776)' पर हस्ताक्षर किए और परिणामस्वरूप 'सूरत संधि' स्थगित कर दी गई।

2500 Soilders



Madhavrao Narayan (1774-96)

- During this period Madhavrao Narayan ruled with the pure help of 'Nana Fadnavis'. / इस अवधि के दौरान माधवराव नारायण ने नाना फड़नवीस की विशुद्ध सहायता से शासन किया।
- In 1796, He died. / 1796 में उनकी मृत्यु हो गई।



1800

Bajirao II (1796-1818)

- This was the period of decline of Maratha Empire. / यह मराठा साम्राज्य के पतन का समय था।
- In 1796 AD after the death of Nana Fadnavis, Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad fought with each other for territories. / 1796 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद, सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ ने क्षेत्रों के लिए आपस में युद्ध किया।
- In 1802, Bajirao II signed a 'treaty of Bassein' with Britishers and took the support of British Army in Poona. / 1802 में, बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के साथ बसेन की संधि पर हस्ताक्षर किए और पुणे में ब्रिटिश सेना का समर्थन प्राप्त किया।
- Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad opposed Bajirao II. But Lord Wellesley compelled them to accept treaty under subsidiary alliance. / सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ बाजीराव द्वितीय के खिलाफ थे। लेकिन लॉर्ड वेलेजली ने उन्हें मजबूर कर दिया कि वे सहायक संधि (Subsidiary Alliance) के तहत संधि स्वीकार करें।

Nana Sahib (1818-57)

1848-56

- After the death of Bajirao II, Nana Sahib ruled./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद नाना साहब ने शासन किया।
- After the death of Bajirao II, Nana Sahib has requested to British Government for Pension and Peshwa Post./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद, नाना साहब ने ब्रिटिश सरकार से पेंशन और पेशवा पद के लिए अनुरोध किया।
- Lord Dalhousie denied his request, and finally in 1857 revolt he took part against British Empire./ लॉर्ड डलहोजी ने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया और अंततः 1857 के विद्रोह में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भाग लिया।
- But unfortunately Maratha Empire came to an end./ लेकिन दुर्भाग्य से मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।



The NANA SAHIB, from an Original Drawing.

Anglo - Maratha wars

War / युद्ध	Year / वर्ष	Main Parties / प्रमुख पक्ष	Cause / कारण	Result / परिणाम
First Anglo-Maratha War पहला ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1775-1782	British vs Marathas अंग्रेज़ बनाम मराठा	British supported Raghunath Rao for Peshwaship अंग्रेज़ रघुनाथ राव को पेशवा बनाना चाहते थे	Maratha Victory मराठों की जीत Treaty of Salbai (1782) – British accepted Madhavrao II सलवै की संधि – अंग्रेज़ों ने माधवराव द्वितीय को स्वीकार किया
Second Anglo-Maratha War दूसरा ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1803-1805	British vs Scindia, Bhonsle, Holkar अंग्रेज़ बनाम सिंधिया, भोंसले, होल्कर	Internal conflicts; Treaty of Bassein by Bajirao II आंतरिक कलह; बाजीराव द्वितीय द्वारा बसेन की संधि	British Victory अंग्रेज़ों की जीत Large territories ceded मराठों ने बड़े क्षेत्र खोए
Third Anglo-Maratha War तीसरा ऐंग्लो-मराठा युद्ध	1817-1818	British vs Peshwa Bajirao II & Maratha Chiefs अंग्रेज़ बनाम पेशवा बाजीराव-II और मराठा सरदार	Maratha attempt to revive power मराठों का शक्ति वापस पाने का प्रयास	Complete British Victory पूरी तरह अंग्रेज़ों की जीत End of Maratha Empire मराठा साम्राज्य का अंत; Peshwaship abolished

Decline of Maratha Empire

1. Lack of Strong Central Leadership / मज़बूत केंद्रीय नेतृत्व का अभाव :

- After Peshwa Madhavrao I's death (1772), no capable leaders./ पेशवा माधवराव प्रथम की मृत्यु (1772) के बाद, योग्य नेताओं का अभाव था।
- Successors like Raghunath Rao, Baji Rao II were weak and often engaged in internal quarrels./ रघुनाथ राव, बाजीराव द्वितीय जैसे उत्तराधिकारी कमजोर थे और अक्सर आंतरिक झगड़ों में उलझे रहते थे।

2. Internal Rivalry Among Maratha Chiefs / मराठा सरदारों के बीच आंतरिक प्रतिद्वंद्विता :

- Conflicts between major houses : Peshwas (Pune), Holkars (Indore), Scindias (Gwalior), Gaekwads (Baroda), Bhonsles (Nagpur)./ प्रमुख घरानों के बीच संघर्ष: पेशवा (पुणे), होल्कर (इंदौर), सिंधिया (ग्वालियर), गायकवाड़ (बड़ौदा), भोंसले (नागपुर)।
- Each tried to gain dominance, weakening unity./ प्रत्येक ने प्रभुत्व हासिल करने की कोशिश की, जिससे एकता कमजोर हुई।

1. Weak and decentralized Confederacy system / कमजोर और विकेन्द्रीकृत संघ व्यवस्था:

- **The Maratha Empire Functioned like a confederacy, not a unified empire./** मराठा साम्राज्य एक एकीकृत साम्राज्य की तरह नहीं, बल्कि एक संघ की तरह कार्य करता था।
- **Chiefs acted independent, often ignoring the Peshwa's orders./** सरदार स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे और अक्सर पेशवा के आदेशों की अवहेलना करते थे।

2. Defeat in the Third Battle of Panipat (1761) / पानीपत के तीसरे युद्ध (1761) में हार :

- **Huge loss of manpower and leadership./** जनशक्ति और नेतृत्व का भारी नुकसान।
- **Destroyed prestige and weakened military morale./** प्रतिष्ठा का हास हुआ और सैन्य मनोबल कमजोर हुआ। ✓
- **Gave enemies (British, Mysore, Afghans) a chance to rise./** दुश्मनों (अंग्रेजों, मैसूर, अफ़गानों) को उभरने का मौका मिला। ✓

1. British Interference & Superior Diplomacy / ब्रिटिश हस्तक्षेप और श्रेष्ठ कूटनीति :

- The British exploited Maratha rivalries through treaties and alliances (e.g. treaty of surat, salbai, Bassein, Subsidiary alliance, doctrine of lapse)/ अंग्रेजों ने संधियों और गठबंधनों (जैसे सूरत, सालबाई, बेसिन की संधि, सहायक संधि, राज्य हड़प नीति) के माध्यम से मराठा प्रतिद्वंद्विता का फायदा उठाया।

2. Treaty of Bassein (1802) / बेसिन की संधि (1802):

- Peshwa Baji Rao II accepted British protection./ पेशवा बाजीराव द्वितीय ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार कर लिया।
- Considered a national humiliating act/ इसे राष्ट्रीय अपमान माना गया।
- It divided Maratha chiefs and led to the Second Anglo- Maratha war(1803-05) इसने मराठा सरदारों को विभाजित कर दिया और द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-05) का कारण बना।

7. Inferior Military System / निम्न सैन्य व्यवस्था:

- Relied on old-style cavalry and untrained troops./ पुरानी शैली की घुड़सवार सेना और अशिक्षित सैनिकों पर निर्भर।
- British had modern-infantry, artillery, and better training. / अंग्रेजों के पास आधुनिक पैदल सेना, तोपखाना और बेहतर प्रशिक्षण था।
- Marathas lacked unified command and standardized armies./ मराठों के पास एकीकृत कमान और मानकीकृत सेनाओं का अभाव था।

1. Financial Weakness / वित्तीय कमजोरी:

- Heavy dependence on Chauth and Sardeshmukhi revenue from other states./ अन्य राज्यों से मिलने वाले चौथ और सरदेशमुखी राजस्व पर अत्यधिक निर्भरता।
- After losing territories and wars, income reduced sharply./ क्षेत्रों और युद्धों को खोने के बाद, आय में तेज़ी से कमी आई।
- Continuous wars drained treasury./ लगातार युद्धों से राजकोष खाली हो गया।

9. Rise of Strong Rivals / प्रबल प्रतिद्वंद्वियों का उदय:

- Hyder Ali and Tipu Sultan in Mysore. / मैसूर में हैदर अली और टीपू सुल्तान।
- Nizam of Hyderabad / हैदराबाद के निज़ाम
- British, all challenged Maratha supremacy at the same time. / अंग्रेजों, सभी ने एक ही समय में मराठा वर्चस्व को चुनौती दी।

1. Absence of National Vision / राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभाव :

- Chiefs focused on personal territories, not building a unified nation or centralized empire. / प्रमुखों ने एकीकृत राष्ट्र या केंद्रीकृत साम्राज्य के निर्माण के बजाय व्यक्तिगत क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया।

END → Mughal



Y U U